दिखाने की वह भंगी नरेन्द्र के हृदय की गहराइयों में उतर गयी। वह उसकी ~~सरलता~~ आकर्षक सरलता पर मुग्ध हो गया। उसने उसे न केवल सराहा वरन् अपने हाथों से उसके कानों से कंगन उतार कर उसके हाथों में पहना दिया। अपने अध्ययन की समाप्ति पर वह कुछ स्वर्णमुद्राएं, वस्त्र एवं किरण के लिए एक जोड़ा ~~कंगन~~ कंगन लेकर जोगीश्वर के पास गया। जोगीश्वर ने किरण का हाथ उसके हाथ में सौंपते हुए ~~उसके~~ स्वयं संसार से दूर हिमालय के लिए प्रस्थान कर गये। इन सारी बातों से वह सुन्न रह गया। उसे लगा- कल्पना इतनी तीव्र गति से दौड़ी कि वह आश्चर्यचकित होकर रह गया। यद्यपि किरण उसके हृदय की गहराइयों में बस गयी थी तथापि इतनी जल्दी यह सब घटित हो जायेगा उसने सोचा भी नहीं था। अतः वह किरण को लेकर अपने घर आ गया। जीवन के दिन जल्दी-जल्दी बीतने लगे। किरण अत्यन्त सुन्दरी थी। नित्य नये शृंगार से उसका रूप निखरा था किन्तु वन की प्राकृतिक सरलता में जो रूप की स्वाभाविकता थी किरण दुबारा उसे नहीं पा सकी। नरेन्द्र उसके सौन्दर्य पर कभी विलायती गहने कभी कानों के बालियां तो कभी कोई अन्य आभूषण न्यौछावर करता रहता था। किरण भी अपने रूप की इस अभ्यर्थना से प्रसन्न थी। काल अजस्र सरिता के समान प्रवाहित हो रहा था। इसी बीच नरेन्द्र एक दिन अपने मित्र मोहन के घर नाच देखने गया। उस दिन उस नर्तकी के रूप, उसके संगीत एवं उसके नृत्य पर ऐसा रीझा कि उसकी अपनी पत्नी किरण का रूप उसके हृदय से उतर गया। वह उस नर्तकी के रूप जाल में उलझता ही गया। उसे प्रसन्न करने के लिए तरह-तरह के आभूषण कीमती बनारसी साड़ी अन्य शृंगार उपहार लेकर उसके समक्ष उपस्थित होने लगा। वह नर्तकी भी नरेन्द्र को

अपने इशारों पर नचाने लगा। धीरे-धीरे
नरेन्द्र ने किरण के सारे गहने चोरी छुपे उस
नर्तकी पर लुटा दिया किरण से रोज तरह-तरह
के बहाने बनाकर वह घर से गायब रहने लगा।
धीरे-धीरे आभूषणों का कोष खाली हो गया। यह
जानकर ~~वे~~ वह नर्तकी नरेन्द्र से दूर होती गयी।
नरेन्द्र को उसके बगैर चैन न था। ~~[illegible]~~ ये बातें
अन्ततः सबके सम्मुख खुल गयी। किरण यह सुन
कर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उसका हृदय इस
अप्रत्याशित आघात से खंड-खंड हो गया। वह बेसुध
~~[illegible]~~ हो गयी। किन्तु नरेन्द्र को इससे कोई अन्तर नहीं पड़ा।
उसे तो किसी आभूषण की आवश्यकता थी जिसे देकर
उस रूपसी का सान्निध्य प्राप्त कर सके। इसी क्रम में
उसने किरण की आलमारी और उसके बक्से छान मारे।
किन्तु कहीं कुछ नहीं मिला। हार कर उसने किरण से ही
~~पूछलिया~~ पूछलिया कि उसके पास कोई आभूषण बचा
है कि नहीं। उत्तर में किरण ने लेटे-लेटे ही धीरे से
अपना घूँघट हटाकर दिखा दिया - वही कानों में कुंडल।
उसके कानों को छेदकर पैठे थे। इसी के साथ किरण
का देहान्त हो जाता है और नरेन्द्र को किरण से प्रथम
मिलन की ~~[illegible]~~ घड़ी याद हो आती है। ~~और~~ अपनी भूल पर
वह पछताकर रह जाता है और कहानी समाप्त हो जाती है।